प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
सत्र 16: प्रजनन के लिए बनाया गया (8ए)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **1 थिस्सलुनीकियों 2:19-20**
19 "हमारी आशा या आनन्द या मुकुट क्या है
हमारे प्रभु यीशु के आने पर उसके सामने घमण्ड करने का?
क्या यह तुम नहीं हो? 20 क्योंकि तुम ही हमारी महिमा और आनन्द हो।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें:* **1 थिस्सलुनीकियों 2**

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. कौन पहले आता है? मुर्गी या अंडा? स्वयं के लिए मरना या शिष्य बनना?

दो. फिलिप्स कहते हैं कि फल पैदा करने का अर्थ है दूसरों में उस चरित्र को पुन: उत्पन्न करना जो परमेश्वर की आत्मा ने आप में एक शिष्य के रूप में बनाया है। क्या आप इस सरल योजना से सहमत हैं? यह वही है जो आप दूसरों में प्रशिक्षित करते हैं।

तीन. फिलिप्स पौलुस के साथ यह भी कहता है कि यीशु समझौता नहीं कर रहा है - कि या तो एक विश्वासी प्रजनन करता है, या वह मसीह का अनुयायी नहीं है। यदि आप सहमत हैं, तो इसके निहितार्थ क्या हैं?

चार. लेखक यह भी कहता है कि शैतान का झूठ यह है कि हम चेला बनाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। लेकिन यह आपकी भलाई नहीं बल्कि आप में मसीह की पूर्णता है जो आपको शिष्यों को प्रशिक्षित करने के योग्य बनाती है। इसके अलावा, यह वह नहीं है जो आप जानते हैं, बल्कि यह मायने रखता है कि आप (यीशु) को जानते हैं।

पाँच. इसमें कोई संदेह नहीं है, अनुशासन कठिन काम हो सकता है लेकिन सेवकाई को पुरस्कृत करना हो सकता है! लेकिन सरल सच्चाई यह है कि यदि आप अपने आप के लिए मर गए हैं, तो मसीह आपके माध्यम से अपने चरित्र को पुन: उत्पन्न करेगा यदि आप उसके राज्य को आगे बढ़ाने की उसकी योजना में भाग लेते हैं, अर्थात्, उसके लोगों को प्रशिक्षित करते हैं।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 8 ए लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

एक बार जब आप अपने आप के लिए मर जाते हैं, तो आप एक शिष्य होते हैं। और शिष्यों को प्रजनन करने के लिए बनाया जाता है। यीशु स्पष्ट था: "... यदि कोई मुझ में बना रहता है ... वह बहुत फल लाएगा ..." यूहन्ना 15:5 एनआईवी, इटैलिक जोड़ा गया)। नए नियम में दूसरों में उस चरित्र को पुन: पेश करने से बढ़कर कोई बुलाहट और कोई स्पष्ट आदेश नहीं है जिसे परमेश्वर की आत्मा ने आप में बनाया है। मसीह हर मसीही से आत्मिक फल की अपेक्षा करता है। पौलुस स्वस्थ आत्मिक बच्चे होने के महत्व को प्रकट करता है: "क्योंकि हमारी आशा, हमारा आनन्द, या वह मुकुट क्या है जिसमें हम अपने प्रभु यीशु के आने पर उसकी उपस्थिति में महिमा करेंगे? क्या यह आप नहीं हैं? वास्तव में, आप हमारी महिमा और आनंद हैं" (1 थिस्सलुनीकियों 2:19,20 एनआईवी, इटैलिक जोड़ा गया)। पौलुस जानता था कि केवल एक व्यक्ति को मसीह की ओर ले जाना ही पर्याप्त नहीं था। वह अपने परिश्रम को व्यर्थ मानता था यदि उसके आध्यात्मिक बच्चे परिपक्व शिष्य नहीं बनते। और परिपक्व शिष्य दूसरों में अपने जीवन को पुन: उत्पन्न करते हैं - वे स्थायी फल लाते हैं। ध्यान दें कि पौलुस उन विश्वासियों को लिख रहा था जिन्हें वह प्रभु के पास ले गया था जब उसने उनसे आग्रह किया था कि "जीवन के वचन को दृढ़ रखें, ताकि मसीह के दिन में मुझे महिमा का कारण मिले, क्योंकि मैं व्यर्थ नहीं भागा और न व्यर्थ परिश्रम किया" (फिलिप्पियों 2:16)। उसने 1 थिस्सलुनीकियों 3:5 में इस चिंता को

दोहराया: "... जब मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सका, तो मैंने आपके विश्वास के बारे में जानने के लिए भेजा। मुझे डर था कि किसी तरह से परीक्षा देने वाले ने आपको प्रलोभित किया होगा और हमारे प्रयास बेकार हो सकते हैं" (एनआईवी)। और गलातियों के विश्वासियों को उसने लिखा, "मैं तुम्हारे लिए डरता हूं, कि शायद मैं ने तुम्हारे लिए व्यर्थ परिश्रम किया है" (गलातियों 4:11)।

पौलुस यह सुझाव देने की हिम्मत कैसे कर सकता है कि उसकी प्रसिद्ध मिशनरी यात्राएं बर्बाद हो सकती हैं जब उनका परिणाम इतने सारे नए ईसाई थे? प्रेरित ने इस संभावना पर पीड़ा क्यों व्यक्त की कि उसका झुंड शारीरिक या सांसारिक हो सकता है? कारण स्पष्ट है। पौलुस जानता था कि यीशु समझौता नहीं कर रहा था: या तो कोई अपने आप से मर जाता है और प्रजनन करता है - या वह मसीह का अनुयायी नहीं है। यीशु ने कोई अन्य विकल्प नहीं छोड़ा। मसीह ने स्वयं अपने शिष्यों से कहा, "... मैंने तुम्हें जाने और फल पैदा करने के लिए चुना है - फल जो बना रहेगा..." (यूहन्ना 15:16 एनआईवी, इटैलिक जोड़ा गया)। केवल गलत जानकारी वाले या अपरिपक्व ही अच्छे कार्यों में इतने व्यस्त होते हैं कि उन्हें अपने आध्यात्मिक बच्चों को प्रजनन के लिए पोषित करने का समय नहीं मिलता है। कोई भी परिपक्व ईसाई आध्यात्मिक रूप से बंजर होने से संतुष्ट नहीं है। अपने जीवन की जांच करने के लिए कुछ समय निकालें। क्या आज कोई एक व्यक्ति है जो परमेश्वर के साथ चल रहा है और दूसरों में आपकी सेवकाई के परिणामस्वरूप मसीह में जीवन की पूर्णता का निवेश कर रहा है? एक आदमी? एक महिला? यदि नहीं, तो आप निष्फल रहे हैं। शायद आप ईमानदारी से चर्च में जाते हैं, गाना बजानेवालों में गाते हैं, शुरुआत करते हैं, एक युवा समूह को प्रायोजित करते हैं या एक बुजुर्ग, डीकन या यहां तक कि एक पादरी के रूप में सेवा करते हैं। आप हर दिन गवाही दे सकते हैं या समूह बाइबल अध्ययन सिखा सकते हैं। ये सराहनीय गतिविधियाँ हैं लेकिन वे शिष्य बनाने के लिए आपकी उच्च बुलाहट को पूरा करने में विफल रहती हैं। गतिविधि आज्ञाकारिता का विकल्प नहीं है; व्यस्तता प्रजनन की जगह नहीं ले सकती। एक कामकाजी शिष्य चर्च के निर्माण में शारीरिक विश्वासियों के एक मेजबान की तुलना में अधिक मूल्यवान है। "ईसाई कार्य" में इतना सक्रिय होने के प्रलोभन का विरोध करें कि आप राज्य के व्यवसाय की उपेक्षा करते हैं। शिष्य बनाने के लिए मसीह के आदेश के प्रकाश में अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करें। अनुशासन के प्रति आपकी प्रतिबद्धता मसीह के निःस्वार्थ बलिदान के जवाब में परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम से उत्पन्न होती है। आपकी कृतज्ञता आपको बहुत फल देकर परमेश्वर की महिमा करने के लिए मजबूर करती है। आध्यात्मिक गुणन प्रत्येक शिष्य की सच्ची इच्छा और जिम्मेदारी है (यूहन्ना 15:8)। दुर्भाग्य से, कई विश्वासी प्रजनन के लिए इस मौलिक प्रतिबद्धता को बनाने में संकोच करते हैं। शैतान हमें बताता है कि हम शिष्य बनाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। लेकिन मूर्ख मत बनो। यह आपकी भलाई नहीं है, बल्कि आप में मसीह की पूर्णता है जो आपको दूसरों को शिष्य बनाने के योग्य बनाती है। यह वह नहीं है जो आप जानते हैं बल्कि यह है कि आप कौन जानते हैं। यदि आप अपने आप के लिए मर गए हैं, तो मसीह आपके माध्यम से अपने चरित्र को पुन: उत्पन्न करेगा। परमेश्वर की आत्मा ने उसी पतरस का उपयोग किया जिसने पिन्तेकुस्त में शक्ति और साहस के साथ प्रचार करने के लिए मसीह को तीन बार अस्वीकार किया था। जब आप स्वेच्छा से परमेश्वर की इच्छा के बारे में अपने बढ़ते ज्ञान का पालन करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते हैं, तो मसीह आपकी कमजोरी को ताकत में बदल देता है। यदि आप पूर्ण होने तक प्रतीक्षा करते हैं, तो आप कभी भी चेला नहीं बनेंगे। लेकिन जब आप विश्वास में बाहर निकलते हैं, तो परमेश्वर आपके माध्यम से अपना राज्य बनाएगा। अब मैं सावधानी का एक शब्द जोड़ता हूं। अनुशासन के लिए आत्म-मृत्यु के लिए निरंतर प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। पौलुस कहता है, "क्योंकि हम जो जीवित हैं, यीशु के लिये निरन्तर मृत्यु के घाट उतारे जाते हैं, कि यीशु का जीवन भी हमारे नश्वर शरीर में प्रगट हो" (2 कुरिन्थियों 4:11)। यूहन्ना कहते हैं, "... हमें अपने भाइयों के लिए अपना प्राण देना चाहिए" (1 यूहन्ना 3:16)। अनुशासन कठिन काम है। पौलुस ने हर एक व्यक्ति को मसीह में पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने के लिए "परिश्रम" किया (कुलुस्सियों 1:28,29)। शिष्य अपने शिष्य में अपना जीवन निवेश करने की प्रतिबद्धता करता है: "... हम आपको न केवल परमेश्वर का सुसमाचार बल्कि अपना जीवन भी प्रदान करने में प्रसन्न थे..." (1 थिस्सलुनीकियों 2:8)। आध्यात्मिक पालन-पोषण वर्षों तक प्रत्येक सप्ताह कई घंटों की मांग करता है। यह भावनात्मक ऊर्जा के व्यय के लिए कहता है। पॉल पूछता है, "मेरे कमजोर होने के बिना कौन कमजोर है? मेरी गहन चिंता के बिना पाप में कौन ले जाया जाता है?" (2 कुरिन्थियों 11:29)। अपना जीवन किसी अन्य व्यक्ति में डालना एक उपभोग करने वाला निवेश है। जब तक आप लागत की गणना न कर लें, तब तक अनुशासित रिश्ते के लिए परमेश्वर के सामने प्रतिबद्धता न बनाएं।

पेज 81-83

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

मूल: एक शिष्य का निर्माण डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981 पब। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261012